

मुख्य संपादक शशि प्रकाश द्विवेदी, मुख्य राजभाषा अधिकारी	संपादक लोकेश कुमार शर्मा, वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी	उप संपादक पी.के.गवेल, वरिष्ठ अनुवादक
--	---	---

सिरपुर : छत्तीसगढ़ का गौरवशाली इतिहास



पुण्य सलिला महानदी के तट पर स्थित सिरपुर का अतीत सांस्कृतिक, समृद्धि तथा वास्तुकला के लालित्य से ओतप्रोत रहा है। सिरपुर प्राचीन काल में श्रीपुर के नाम से विख्यात था तथा पाण्डुवंशीय शासकों के काल में इसे दक्षिण कोसल की राजधानी होने का गौरव प्राप्त है। पाण्डुवंशीय शासकों के काल में सिरपुर महत्वपूर्ण राजनैतिक एवं सांस्कृतिक केंद्र के रूप में प्रतिष्ठित हुआ। महाशिवगुप्त बालार्जुनों ने अपने 57 वर्ष के सुदीर्घ शासनकाल में यहां अनेक मंदिर, बौद्ध विहार, सरोवर तथा उद्यानों का निर्माण करवाया। सातवीं सदी में चीन के महान पर्यटक तथा विद्वान ह्वेनसांग ने सिरपुर की यात्रा की थी। उस समय यहां लगभग 100 संघाराम थे तथा महायान संप्रदाय के 10000 भिक्षु निवास करते थे। महाशिवगुप्त बालार्जुन ने स्वयं शैव मतावलंबी होते हुए भी बौद्ध विहारों को उदारतापूर्वक प्रचुर दान देकर संरक्षण प्रदान किया था।

ऐतिहासिक तथा पुरातात्विक पृष्ठभूमि :

धार्मिक, ऐतिहासिक और पुरातात्विक विशेषताओं से परिपूर्ण सिरपुर का पुराना नाम श्रीपुर था और इसे समृद्धि की नगरी भी कहा जाता था। सिरपुर की प्राचीनता का सर्वप्रथम परिचय शरभपुरीय शासक प्रवर राज तथा महासुदेव राज के ताम्रपत्रों से उपलब्ध होता है जिनमें उन्होंने 'श्रीपुर' से भूमिदान किया था। यहां का प्रसिद्ध लक्ष्मण मंदिर छठवीं शताब्दी में निर्मित भारत का सबसे पहले ईंटों से बना मंदिर है। यह मंदिर सोमवंशी राजा हर्षगुप्त की विधवा रानी वासटा देवी द्वारा बनवाया गया था। वह सिरपुर का स्वर्णकाल था। कालांतर में कई मंदिर एवं विहार काल के गर्त में समा गए। अब यहां गिने-चुने मंदिर तथा विहारों के अवशेष बचे हैं।

सिरपुर से धातु प्रतिमा, प्रतिमा फलक, आभूषण बनाने के विविध उपकरण, लोहे के अनेक प्रकार के बर्तन, कीलें, ताले, जंजीर, सिलबट्टा, दीपक, पूजा के पात्र, घड़े, मिट्टी के मनके, चूड़ियां, पकी मिट्टी की मुहरें एवं खिलौने आदि के साथ-साथ तीन महत्वपूर्ण सिक्के भी प्राप्त हुए थे। इनमें से एक सिक्का शरभपुरीय शासक प्रसन्नमात्र का है तथा दूसरा कलचुरी शासक रत्नदेव के समय का है। तीसरा विशेष उल्लेखनीय सिक्का चीनी राजा कार्दई युवान्

(713 से 741 ईस्वी) के समय का है। 7वीं शताब्दी में यहां आए चीनी यात्री ह्वेनसांग ने श्रीपुर में 70 मंदिरों व 100 विहारों का उल्लेख किया है, जिनमें महायान संप्रदाय के दस हजार भिक्षु निवास करते थे। यह स्थल दीर्घकाल तक ज्ञान-विज्ञान और कला का केन्द्र बना रहा। पाण्डुवंशीय शासकों के काल में सिरपुर महत्वपूर्ण राजनैतिक व सांस्कृतिक केंद्र के रूप में प्रतिष्ठित हुआ।

धार्मिक पृष्ठभूमि:

सिरपुर, प्राचीन काल में 'श्रीपुर' के नाम से विख्यात था तथा सोमवंशी शासकों के काल में इसे दक्षिण कोसल की राजधानी होने का गौरव प्राप्त रहा है। कला के शाश्वत नैतिक मूल्यों एवं मौलिक स्थापत्य शैली के साथ - साथ धार्मिक सौहार्द्र तथा आध्यात्मिक ज्ञान-विज्ञान के प्रकाश से आलोकित सिरपुर भारतीय कला के इतिहास में विशिष्ट कला-तीर्थ के रूप में प्रसिद्ध है। लक्ष्मण मंदिर, आनंदप्रभु कुटी विहार, स्वास्तिक विहार, तीवरदेव विहार, बालेश्वर मंदिर समूह, राजप्रासाद, विविध उत्खनित स्मारक-स्थल एवं उपलब्ध कलात्मक शिल्पकृतियां देश-विदेश के पुराविदों के लिए आकर्षण के केन्द्र हैं। सिरपुर के भग्नावशेषों में भागवत, माहेश्वर एवं तथागत के सदधर्म से शासित अनुयायियों के समवेत घोष अनुगूँजित हैं। गंधेश्वर महादेव स्थानीय व्यक्तियों में आस्था का विशेष केंद्र के रूप में विख्यात है।

पुरातात्विक तथा धार्मिक महत्व के इस पर्यटन स्थल में वर्ष भर जापान, श्रीलंका, म्यांमार, तिब्बत और भूटान सहित विभिन्न देशों के पर्यटक आते रहते हैं।

लक्ष्मण मंदिर:



यह लाल ईंटों से निर्मित भारत के प्राचीन मंदिरों में से एक है। अलंकरण सौंदर्य, मौलिकता तथा निर्माण कौशल की दृष्टि से यह मंदिर अपूर्व है। लगभग 7 फुट ऊँची पाषाण निर्मित जगती पर स्थित मंदिर अत्यंत भव्य है। पंचरथ प्रकार का यह मंदिर गर्भगृह, अंतराल तथा मंडप से युक्त है। मंदिर के बाह्य भित्तियों को आम्र पल्लव, चैत्य गवाक्ष, कूट वातायन, कीर्तिमुख, गजमुख एवं कर्ण आमलक से सुसज्जित किया गया है। मंदिर

का प्रवेश द्वार अत्यंत सुन्दर है। सिरदल पर शेषशायी विष्णु प्रदर्शित हैं। उभय द्वारशाखाओं पर विष्णु के प्रमुख अवतार, कृष्ण लीला के दृश्य, अलंकरणात्मक प्रतीक, मिथुन दृश्य और वैष्णव द्वारपालों का अंकन है। गर्भगृह में नागराज अनंत शेष की बैठी हुई सौम्य प्रतिमा स्थापित है। मंदिर प्रांगण से प्राप्त अभिलेख से यह स्पष्ट है कि इस विष्णु मंदिर का निर्माण महाशिवगुप्त बालार्जुन की माता वासटा ने अपने दिवंगत पति की स्मृति में करवाया था। वासटा मगध के राजा सूर्यवर्मन की पुत्री थी। लक्ष्मण मंदिर का निर्माण काल लगभग 650 ई. के आसपास माना गया है तथा मंदिर निर्माण के कारीगर “केदार” का भी उल्लेख है।



राम मंदिर:

लक्ष्मण मंदिर से कुछ दूरी पर पूर्व की ओर ईंटों से निर्मित एक भग्न तथा जीर्ण-शीर्ण मंदिर स्थित है, जो राम मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है। इस मंदिर के ऊर्ध्व विन्यास में कोण तथा भुजाओं के संयोजन द्वारा प्रतिरथों से

ताराकृति तल विन्यास की रचना की गई। इस कलात्मक मंदिर का संपूर्ण शिखर नष्ट हो चुका है तथा भग्न भित्तियाँ कुछ अंशों में शेष हैं। लक्ष्मण मंदिर तथा राम मंदिर के निर्माण में मात्र कुछ दशकों का अंतराल है। मंदिर परिसर स्थित टीले को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग, रायपुर द्वारा उत्खनन किए जाने पर तत्कालीन आवासीय भवन की संतचना प्राप्त हुई है जिसमें स्थानीय भवन निर्माण शैली की विशेषता दिखाई देती है।



शिव मंदिर:



गंधेश्वर मंदिर के पूर्व में तीन शिव मंदिर प्रकाश में आए हैं। पूर्वाभिमुखी मंदिर में 12 प्रस्तर स्तम्भों वाले तोरण द्वार के पूर्वी सीढ़ियों के दोनों तरफ मंदिर के हाथी बांधने के पत्थर हैं। अंदर एक विशाल प्रांगण है। इस पंचायतन मंदिर के मुख्य मंदिर में उत्तर तथा दक्षिण से सीढ़ियों द्वारा प्रवेश किया जा सकता है। मंदिर 1.60 मीटर ऊँचे प्रस्तर निर्मित चबूतरे पर स्थित है। मंडप चार स्तम्भों वाला है तथा तारे के आकार वाले

गर्भगृह में श्वेत रंग का धारालिंग एवं योनिपीठ स्थापित है। मंदिर में दो परकोटे हैं। भीतरी परकोटा ईंटों से तथा बाहरी पत्थर से निर्मित है। मंदिर के दक्षिण में पुजारी का आवास है तथा भीतरी परकोटा में यात्रियों के निवास के लिये कमरे बने हैं। दोनों परकोटे के बीच में रंगशाला या सभामंडप है।

इस मंदिर के तोरण द्वार के पूर्व में 30 फीट चौड़ी सड़क है जो शहर के मध्य में आरम्भ होकर नदी तट तक जाती है। इस सड़क के दोनों ओर पूजन सामग्रियों की छोटी-छोटी दुकानें हैं। सारी दुकानों की लंबाई - चौड़ाई एक समान है। प्रत्येक दुकान के पीछे भंडार गृह स्थित है। मार्ग के दोनों ओर आठ-आठ दुकानें हैं।



सुरंग टीला मंदिर:



वर्तमान गाँव के मध्य में स्थित सुरंग टीला मंदिर एक विशाल पहाड़ीनुमा स्थल के उत्खनन से प्रकाश में आया है। बड़े-बड़े पत्थरों से निर्मित यह पंचायतन शैली का शिव मंदिर 4.65 मीटर ऊँचे अधिष्ठान पर स्थित है। संरचना के ऊपर चार मंदिर हैं जिसमें से चार में शिवलिंग तथा पाँचवे में गणेश की मूर्ति स्थापित है। इनके सामने 32 स्तम्भों का मंडप है। पश्चिम में 43 सीढ़ियाँ हैं। एक स्तम्भ में मंदिरों का प्रारूप अंकित है। मंदिर 12 वीं शताब्दी में भूकंप से ध्वस्त हो गया था। मंदिर के दक्षिण में पुजारी का आवास है

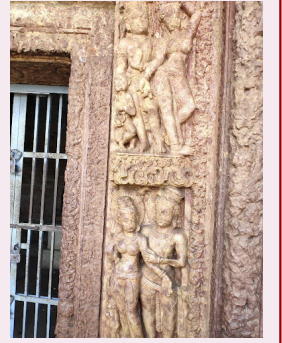
तथा दक्षिण-पश्चिम में तांत्रिक मंदिर है जिसमें एक ही अधिष्ठान पर तीन गर्भ गृह हैं जिनमें विष्णु, बृह्मा तथा शिवलिंग स्थापित हैं। श्वेत धारालिंग तथा योनिपीठ सोलहकोणीय है। सुरंग टीला तथा परिसर के मंदिरों का निर्माण यहाँ से प्राप्त शिलालेख के अनुसार महाशिवगुप्त बालर्जुन ने सातवीं शताब्दी में करवाया था।



मंदिर स्थापत्य कला:



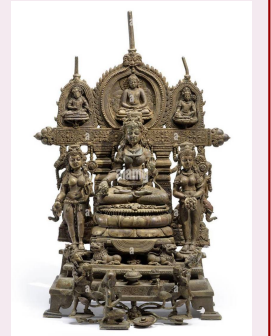
सिरपुर के मंदिर गुप्तकालीन स्थापत्य कला का अनुपम शिल्प हैं जो ईंटों से निर्मित हैं। प्राचीन मंदिरों में ईंटों से निर्मित मंदिर कम ही होते थे। यह देश का दूसरा प्राचीनतम मंदिर है जो ईंटों से बना है। लक्ष्मण मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित है। नागर शैली में निर्मित यह मंदिर अलंकरण सौंदर्य तथा निर्माण कौशल की दृष्टि से अद्वितीय है। मंदिर के शिखर में एक से अधिक निर्माण शैलियों की झलक दिखती है, विशेषकर उड़ीसा शैली की। इसका निर्माण पंचरथ शैली में किया गया है। जिसमें मंडप, अंतराल एवं गर्भगृह है। गर्भगृह के भीतर नागराज शेष की बैठी हुई सौम्य प्रतिमा रखी है। इसकी दीवारों पर चैत्य, गवाक्ष, वातायन, कीर्तिमुख, कर्ण आमलक आदि प्रभावशाली लगते हैं। प्रवेशद्वार पर विष्णु के शेषशायी रूप के साथ कुछ अवतारों का मोहक चित्रण है। तीन ओर की दीवारों पर तीन छोटे-छोटे दरवाजे बने हैं। ईंटों के बने ये दरवाजे मंदिर की शोभा बढ़ाते हैं।



धातु प्रतिमाएं :



सातवीं-आठवीं सदी में सिरपुर महायान धर्म का सुप्रसिद्ध केन्द्र था तथा धातु प्रतिमाओं के निर्माण में अग्रगण्य रहा है। सिरपुर में सर्वप्रथम 1939 में धातु प्रतिमाओं का भंडार प्राप्त हुआ था। यहां से प्राप्त धातु प्रतिमायें रायपुर, नागपुर, नई दिल्ली स्थित संग्रहालय तथा मुम्बई के भारतीय विद्या भवन में संरक्षित हैं। सिरपुर की धातु प्रतिमाओं में 'श्री' एवं 'शील' का अद्भुत संतुलन है। उपलब्ध धातु प्रतिमाओं में बुद्ध, अवलोकितेश्वर, पद्मपाणि, वज्रपाणि, मंजुश्री, तारा आदि के अतिरिक्त ऋषभनाथ तथा विष्णु आदि उल्लेखनीय हैं। इन प्रतिमाओं के प्रदीप्त मुख, अर्ध निमीलत नेत्र, केशविन्यास, वरद मुद्रा युक्त हथेली की अंगुलियों एवं परिधान के तरंगवत् सिलवटों में आध्यात्मिक सौंदर्य के साथ कला का चरमोत्कर्ष व्याप्त है। सिरपुर की धातु प्रतिमाएं, दक्षिण कोसल की धातु शिल्पियों के अद्भुत कौशल को प्रकट करती हैं तथा इनकी गणना भारतीय कला के उत्कृष्ट कलाकृतियों में की जाती है। भारत महोत्सव के अन्तर्गत सिरपुर से प्राप्त धातु प्रतिमाएं पेरिस, जापान तथा अमेरिका में प्रदर्शित की जाती हैं। सिरपुर की धातु प्रतिमाओं से भारतीय ललित कला के इतिहास में एक गौरवशाली अध्याय जुड़ा है।



बौद्ध स्तूप:



सन् 639 में चीनी यात्री व्हेनसांग सिरपुर आये थे तब उन्हें बताया गया था कि वहाँ पर राजा अशोक द्वारा निर्मित बौद्ध स्तूप है। चीनी यात्री द्वारा बतायी दिशा में यह स्तूप भग्नावस्था में जनवरी 2009 में प्राप्त हुआ। बड़े-बड़े पत्थरों से निर्मित यह स्तूप 13.20 x 12.80 मीटर के प्रस्तर निर्मित अधिष्ठान पर स्थित है। स्तूप 4.30 मी. ऊँचा है तथा जिसके दो छत्र मौजूद हैं। छत्र का व्यास 45 से.मी. है। दूसरी शताब्दी में अधिष्ठान के पश्चिम भाग में विस्तार किया गया है जिसका प्रमाण सीढ़ियों पर ब्राम्ही में अंकित 'हेल' शब्द है। यह स्तूप सिरपुर में ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में बौद्ध धर्म के आगमन का प्रमाण है।

बौद्ध विहार (तीवरदेव महाविहार) :



तीवर देव महाविहार अपनी विशालता, भव्यता तथा अद्भुत शिल्प कौशल की दृष्टि से अद्वितीय है। बौद्ध महाविहार लगभग 902 वर्ग मीटर परिक्षेत्र में निर्मित है। प्रस्तर तथा ईंटों से निर्मित पश्चिमोन्मुखी बौद्ध विहार का निर्माण सातवीं शताब्दी में हुआ था इसमें पाँच गर्भगृह हैं जिनमें से मध्य में महात्मा बुद्ध की भूस्पर्श मुद्रा में मूर्ति स्थापित है। भवन के मध्य में कुंड है तथा अर्ध मंडप में नाग कन्याओं आदि की मूर्तियाँ लगी हैं। प्रवेश द्वार के सामने फर्श पर चक्र बना है। गर्भगृहों के द्वारों के ऊपर प्रस्तर निर्मित सिरदल शिला है जिनमें बुद्ध की जीवन कथा अंकित है। इन विहारों की तल योजना में गुप्तकालीन मंदिर तथा आवासीय भवन निर्माण कला का सुंदर समन्वय है।

आनंद प्रभु कुटी एवं स्वास्तिक विहार:



बौद्ध धर्म से संबंधित अवशेषों की दृष्टि से सिरपुर विशेष महत्वपूर्ण है। सर्वप्रथम वर्ष 1956-57 के उत्खनन कार्य से यहां ईंटों से निर्मित दो बौद्ध विहारों के अवशेष प्रकाश में आये हैं। उत्खनित विहारों की वास्तु योजना में गुप्तकालीन मंदिर तथा आवासीय भवन निर्माण कला का सुंदर समन्वय है। इन विहारों के मुख्य कक्ष (गर्भगृह) में भगवान बुद्ध की भूमिस्पर्श मुद्रा में लगभग साढ़े छः फुट ऊँची कलात्मक प्रतिमा प्रस्थापित है। विहार में प्रमुख स्थविर तथा अन्य भिक्षुओं के ध्यान, अध्ययन-अध्यापन और निवास की सुविधा थी। आधार तल में निवास के लिए मण्डल के दोनों ओर अनेक कक्ष निर्मित हैं तथा इन कक्षों में दीपक रखने के लिए आले बने हुए हैं। इसके सम्मुख भाग में तोरण था जिसके दोनों ओर द्वारपाल तथा अर्ध मंडप में बौद्ध देवताओं की प्रतिमाएं भित्ति से संलग्न प्रस्थापित रही हैं। अभिलेख के आधार पर इस विहार का नामकरण आनंदप्रभु कुटी विहार किया गया है। इसी के सन्निकट

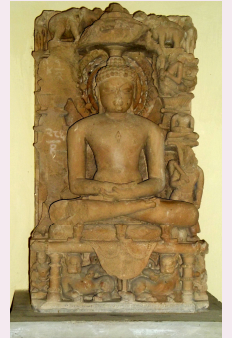


एक अन्य ध्वस्त विहार भी उत्खनन से प्रकाश में आया है। तल योजना के आधार पर इसे स्वस्तिक विहार के नाम से जाना जाता है सिरपुर के उत्खनन में प्राप्त समस्त बौद्ध विहार द्वितल (भू-तल एवं प्रथम तल) स्थापत्य योजना के अनुरूप निर्मित हैं। इन विहारों का निर्माण महाशिवगुप्त बालार्जुन के समय में करवाया गया था।

जैन प्रतिमाएं :



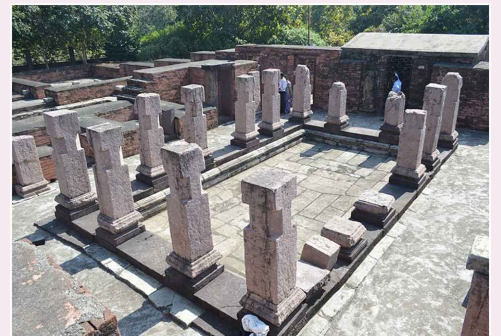
सिरपुर में उत्खनन से मिले तीन जैन मूर्तियों का इतिहास सात वाहन काल से भी पहले के हैं। जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि बौद्ध धर्म के आगमन से पूर्व ही सिरपुर में जैन धर्म के अनुयायी आ गए थे। ईसा पूर्व आठवीं शताब्दी न सही तो भी ईसा पूर्व छठवीं शताब्दी में जब सिरपुर में व्यापार चरम सीमा पर था तो वहाँ जैन धर्म की स्थापना हो चुकी थी। जैन धर्म के देवताओं में 21 लक्षणों का वर्णन आता है। जिसमें धर्म, चक्र, चँवर, सिंहासन, तीन छत्र, अशोक वृक्ष आदि प्रमुख हैं। सिरपुर में उत्खनन से मिली जैन धर्म से संबंधित मूर्तियाँ लक्ष्मण मंदिर परिसर में स्थित संग्रहालय में रखी गई हैं। सिरपुर में 3 जैन विहार तथा पार्श्वनाथ की 3 मूर्तियाँ प्राप्त हो चुकी हैं। जिनमें 7 फीट 4 इंच ऊँची (सबसे ऊँची) प्रतिमा कायोत्सर्ग मुद्रा में है जिसके सिर के पीछे 7 फनवाले नाग देवता हैं। सिरपुर में पार्श्वनाथ की प्रतिमा मिलने से यह स्पष्ट है कि ईसा पूर्व आठवीं शताब्दी या भगवान पार्श्वनाथ के समय से ही सिरपुर में जैन धर्म का प्रादुर्भाव हो चुका था।



आवासीय संरचना:



गंधेश्वर मंदिर के पूर्व में एक वृहत आवासीय संरचना तथा शिल्प निर्माण केन्द्र प्रकाश में आए हैं। ये सभी निर्माण वास्तु शास्त्र के नियमों के अनुसार किये गये हैं। बीच में रास्ते हैं। कमरों में प्रवेश दो पल्लों वाले द्वार से होता था तथा भवन प्रायः दो मंजिले होते थे। प्रथम मंजिल प्रस्तर से तथा दूसरी मंजिले ईंटों से निर्मित थे, दूसरे मंजिल पर चढ़ने के लिये सीढ़ियाँ बनी हैं। ऊपरी मंजिल की छत पर कवेलू की जगह प्रस्तर के छप्पर बनाये गये थे। प्रायः हर कमरे में धान कूटने की ओखली बने हैं। प्रत्येक समूह के मकान के समीप एक कुआँ निर्मित है। ये निर्माण ईसा पूर्व छठवीं शताब्दी से लेकर ईसा के बाद चौदहवीं शताब्दी तक के हैं।



भूमिगत अन्नागार:

गंधेश्वर मंदिर के उत्तर पूर्व में महानदी के किनारे विशाल क्षेत्र में फैले व्यापारिक स्थल पर कतार से समान आकार के तराशे गये प्रस्तर से निर्मित अन्नागार प्राप्त हुये हैं। ये अन्नागार 2.20 x 0.80 x 2.20 मीटर आकार के हैं। अन्नागार को ढकने के लिये बड़े-बड़े प्रस्तर खंडों का उपयोग किया गया है। ये स्लाइडिंग हैं। एक अन्नागार में कम से कम 34 क्विंटल अनाज समा सकता है। अब तक 48 अन्नागार मिल चुके हैं। यह व्यवस्था विश्व में पहली बार मिली है।

आयुर्वेदिक स्नान कुण्ड:

प्रत्येक अन्नागार समूह के सामने प्रस्तर निर्मित आयुर्वेदिक स्नान कुंड प्रकाश में आये हैं। खुले बरामदों वाले ये स्नानकुंड अंदर से 1.80 x 1.80 x 0.60 मीटर आकार के हैं। इन कुंडों में विभिन्न व्याधियों की प्राकृतिक चिकित्सा होती थी। प्रत्येक कुंड में पानी के निकास के लिये भूमिगत नालियाँ हैं। कुंडों के ऊपर छतें होती थीं।



सिरपुर संग्रहालय:



लक्ष्मण मंदिर परिसर में भारतीय पुरातत्वीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा नियंत्रित स्थानीय संग्रहालय में सिरपुर से प्राप्त अनेक दुर्भल प्रतिमाएं और स्थापत्य खण्ड संरक्षित कर रखी गई हैं। ये कलाकृतियां शैव, वैष्णव, बौद्ध तथा जैन धर्म से संबंधित हैं। संग्रहालय में प्रदर्शित प्रतिमाएं अत्यंत कलात्मक हैं जिनमें गुप्तकालीन कला की मौलिकता, प्रतिमा विज्ञान की मान्यताओं और परंपराओं का समन्वय है। अंग-संरचना, आभूषण, केश विन्यास तथा परिधान में स्थानीय विशेषताएं प्रत्यक्ष हैं। यहां पर प्रदर्शित अंगड़ाई लेती हुई एक नायिका की प्रतिमा में सौंदर्य, अनुराग तथा चपलता का अद्भुत सामंजस्य है। काले पाषाण से निर्मित चतुर्मुख लिंग के रूपांकित मुख मंडल पर ध्यान, योग, लास्य और उग्र भाव क्रमशः परिलक्षित है। उनके कंठ तथा जटा-जूट में मुक्ताहार गुंफित है। केशविधि को प्रदर्शित करती हुई प्रतिमा में कृष्ण तथा अश्व का अंकन अत्यंत प्रभावोत्पादक है। महिषासुर मर्दिनी प्रतिमा में देवी के अनुग्रह के साथ-साथ संहारक शक्ति की व्यंजना है। इसी प्रकार की अनेक कलात्मक प्रतिमायें यहां प्रदर्शित हैं जिनमें नृसिंह, अम्बिका, चामुंडा, विष्णु, वराह, सूर्य, हारिति, दुर्गा, नाग पुरुष, शिशु सहित मातृका, बुद्ध, तीर्थंकर पार्श्वनाथ, नदी देवियां आदि विशेष महत्वपूर्ण हैं।



सिरपुर से संग्रहित नाग पुरुष की एक मानवाकार प्रतिमा रायपुर संग्रहालय में भी प्रदर्शित है।

सिरपुर पहुँच मार्ग:

सड़क मार्ग - रायपुर से सिरपुर तक की कुल दूरी 83 कि.मी. है। रायपुर से संबलपुर की ओर जाने वाली राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक 53 पर लगभग 66 वें कि.मी. पर स्थित कुहरी ग्राम के मोड़ से उत्तर की ओर यह लगभग 17 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यहां से रायपुर तथा महासमुंद के लिए बस सेवा उपलब्ध है।

रायपुर से राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक 53 पर 37 कि.मी. पश्चात एक छोटा सा कस्बा आरंग आता है, उसके बाद महानदी रास्ता काटती है। महानदी के बाद सफर का आनंद आता है। कुछ किलोमीटर बाद एक छोटा सा बाँध है कोडार जिसके बाद जंगल शुरू हो जाता है। यहाँ हाईवे छोड़कर एक सड़क सिरपुर के लिए जाती है, जो

रेल मार्ग - सभी प्रकार की ट्रेने राजधानी रायपुर जक्शन में पहुँचती हैं। वहाँ से आपको जिला महासमुंद के लिए ट्रेन लेना होगा। जिला महासमुंद से आपको सड़क मार्ग द्वारा बस या टैक्सी मिल जाएगी। महासमुंद से सिरपुर की दूरी मात्र 37 किलोमीटर है।

आवास व्यवस्था - यहाँ रुकने के लिए रिसोर्ट भी उपलब्ध है जिसे छत्तीसगढ़ पर्यटन विभाग द्वारा संचालित किया जाता है। रायपुर में विश्राम भवन तथा आधुनिक सुविधाओं से युक्त अनेक होटल हैं।

आस पास के पर्यटन स्थल:

धसकुड जलप्रपात – मात्र 15 किमी की दूरी में स्थित धसकुड झरना अत्यंत मनमोहक है।

कोडार जलाशय – इस जलाशय में आपको मनोरंजन के लिए बोटिंग एवं रात्रि में एडवेंचर के लिए कैम्पिंग की सुविधा प्रदान की जाती है।

तुरतुरिया – तुरतुरिया मंदिर यहाँ से मात्र 1 घंटे की दूरी पर स्थित है, जो लगभग 37 किमी के आसपास पड़ता है।

खल्लारी – लगभग 50 किमी की दूरी पर स्थित माता खल्लारी देवी के दर्शन के लिए लोग दूर-दूर से यहाँ आते हैं।

उपसंहार:

दक्षिण कोसल के अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पुरातात्विक स्थलों की सूची में सिरपुर का स्थान सबसे ऊँचा है। छत्तीसगढ़ बनने के बाद अब तक के इन दस वर्षों में सिरपुर में 38 टीलों की खुदाई की जा चुकी है। यहां करीब 184 टीलें हैं। सिरपुर में देश की पहली वेद पाठशाला मिली है। इसके अलावा यहां हिन्दू, जैन, बौद्ध, शैव और वैष्णव धर्म के प्रमाण भी मिले हैं। इस ऐतिहासिक स्थल पर शैव और वैष्णव धर्म के धर्मावलंबियों के बीच की खाई को पाटने के उद्देश्य से बने छह हरिहर मंदिर भी प्राप्त हुए हैं। खुदाई के दौरान अब तक यहां 18 मंदिर, 8 बौद्ध विहार और 3 जैन मंदिर मिले हैं। एक बड़ा महल और प्रधानमंत्री निवास भी प्राप्त हुआ है। इस उत्खनन में एक महत्वपूर्ण बात यह भी पता चला है कि सिरपुर एक पूर्ण विकसित नगर होने के साथ ही बड़ा शैक्षणिक, व्यापारिक और आयुर्वेदिक केन्द्र भी था। पूर्णतः वास्तु के अनुरूप बने इस नगर में कई आयुर्वेदिक स्नानागार थे तथा पूरे नगर में भूमिगत नालियां होना यह सिद्ध करता है कि सिरपुर कितना विकसित था।

सिरपुर के आसपास रहने वालों लोगों में सदियों से एक किदवन्ती चली आ रही है कि यहां अढ़ाई वर्ष का खर्चा छुपा हुआ है। यहां खर्चा से आशय धन या संपत्ति है जो कि सही साबित हुई है। खुदाई के दौरान अब तक 48 अन्नागार प्राप्त हो चुके हैं। इन अनाज भंडारों में इतना अनाज समा सकता है कि अगर उस समय ढाई वर्ष तक अकाल पड़े, तब भी दक्षिण कोसल की जरूरत को पूरा किया जा सकता था।

उस काल में पत्थरों की कमी को ध्यान में रखते हुए निर्माणकर्ताओं ने विकल्प के रूप में ईंटों को निर्माण की मुख्य सामग्री बनाया था। ईंटों पर की गई कारीगरी बहुत ही खूबसूरत है। ये ईंटें साढ़े तेरह सौ साल से लगातार बारिश, धूप और हवा के थपेड़ों को झेलते हुए खड़ी है।

14 कानूनी दस्तावेज / 14 LEGAL DOCUMENTS

राजभाषा अधिनियम 1963 (यथा संशोधित, 1967) की धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले वे 14 दस्तावेज, जिन्हें अनिवार्यतः हिंदी व अंग्रेजी में एक साथ तैयार/निष्पादित तथा जारी किया जाना है –

14 legal documents under Official Language Act, 1963 (As Amended, 1967) which are invariably required to be prepare / executed and issued in Hindi and in English simultaneously –

- | | |
|---|---|
| 1. सामान्य आदेश
(General Orders) | 2. संकल्प
(Resolutions) |
| 3. नियम
(Rules) | 4. प्रेस विज्ञप्ति
(Press Communiqués) |
| 5. अधिसूचना
(Notifications) | 6. प्रशासनिक व अन्य रिपोर्ट
(Administrative and other reports) |
| 7. निविदा सूचना
(Tender Notices) | 8. निविदा प्रपत्र
(Tender Forms) |
| 9. संविदा
(Contracts) | 10. करार
(Agreements) |
| 11. अनुज्ञप्ति
(Licences) | 12. अनुज्ञापत्र
(Permits) |
| 13. संसद के सदनों के समक्ष रखी जाने वाली प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्ट
(Administrative and other Reports to be laid before house of the Parliament) | |
| 14. संसद के सदनों के समक्ष रखे जाने वाले सरकारी कागजात
(Official papers to be laid before house of the Parliament) | |

महत्वपूर्ण : (1) वर्तमान कानून के अनुसार, कोई भी अधिकारी उक्त दस्तावेज केवल एक भाषा में तैयार / निष्पादित / जारी करने के लिये प्राधिकृत नहीं है।

Important : (1) Under the existing law, any office is not authorized prepare/execute/issue any of the above documents unilingually.

(2) उपर्युक्त दस्तावेजों को हिंदी-अंग्रेजी द्विभाषी रूप में एक साथ तैयार/निष्पादित/जारी करने की जिम्मेदारी ऐसे कागजातों पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी की है।

(2) It is the responsibility of the concerned officer signing on the above documents to get the same to be prepared/executed/issued in Hindi-English bilingual form simultaneously.

परिवर्तन



नन्हे बालक ने मधुर आम चूस कर गुठली आंगन के एक कोने में फेंक दी। लज्जा से सहमी वह गुठली अपने आप को छुपाने का प्रयास करने लगी। गुठली खुद को नग्न समझ लज्जा और ग्लानि से मन ही मन बिलख रही थी। धरा को उसके लज्जा पर हँसी आई। हवा ने दयावश 2-4 सूखे पत्ते उस पर सरका दिए। अब वह खुद को सुरक्षित समझने लगी।

कुछ पल बीतने के बाद, वह सहज हुई। धरा ने बड़े स्नेह से उसके बदन को ऐसे छुआ जैसे माँ अपने लाचार बच्चे को प्रेम से स्पर्श करती हो। गुठली अब ममता की छाँव में निश्चिंत हुई। धरा ने उसे समझाया, 'कभी खुद को अकेला मत समझो। जिसे समाज हालातों के भंवर में अकेला छोड़ देता है, सारी कायनात उसके समर्थन में उतर आती है। तुम अभी तटस्थ व शांत रहो, समय खुद तुम्हारे अनुकूल होगा। तब तुम स्वयं हालातों को अपने सामने झुकते हुए पाओगे।'

समय बीतता गया, हवा यौवन की मस्ती में उछलने लगी। मेघों की अंगड़ाई से बिजली आपा खो बैठी एवं धरा के आंचल में लुप्त हो गई। गुठली, डर और अचम्भे से छुप कर प्रकृति को निहारने लगी। हवा का आपा खोना, काले मेघों का आकाश में बेतरतीब उछलना, गड़गड़ाना तथा उन्हीं मेघों के बीच से बिजली का लहराकर चमकना गुठली के लिए एक डरावने सपने जैसा था।

इस बीच वर्षा रानी ने धरा से रंगोली खेलना शुरू किया। उस पहली बरसात से मुग्ध होकर धरा ने अपना गंध बिखेर दिया। वर्षा उन्मुक्त बरसी। इधर गुठली ने बूंदों को अपने अंग पर जैसे लपेट लिया। समय पश्चात वर्षा चली गई, आसमान फिर से चमकने लगा, हवा जैसे सो गई।

धरा ने गुठली से कहा, "अब तुम एकांत में चली जाओ, अंदर के एक का भी अंत करो, खुद को भूल कर निश्चल हो जाओ। अब तुम्हारे विस्तार की घड़ी समीप है। जो होने वाला है या हो रहा है, केवल देखती रहो, उसमें दखल न दो।"

समय की अपनी धुन होती है, जिसमें प्रकृति आकार लेती है। गुठली अब आम के एक पौधे में रूपांतरित होकर सूर्य से वार्तालाप करती हुई हवा से खेलने लगी। धरा माँ का फर्ज निभाते हुए गर्भ के जीवन रस से गुठली की गोद भर रही है।

जीवन परिवर्तित होता है, खत्म नहीं।

— संजय खलाले
मुख्य वाणिज्य निरीक्षक
दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, बिलासपुर

भारत सरकार
गृह मंत्रालय
राजभाषा विभाग


सत्यमेव जयते

सी डेक
CDAC
aaQ
प्रमाणित व वेब 2.0

ई-महाशब्दकोश

e-Mahashabdkosh

Home | Search Words | About Us | Foreword | Contact Us

Hindi

Search Words

☐Domain ☐English Usage ☐Hindi Usage ☐English Description ☐Hindi Description ☐All

Search

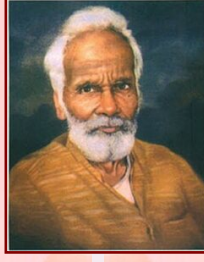
Show Keyboard
Select

राजभाषा विभाग

पृष्ठ 10

जून 2023

बातें



बातें—

हँसी में धुली हुई
सौजन्य चंदन में बसी हुई

बातें—

चितवन में घुली हुई
व्यंग्य-बंधन में कसी हुई

बातें—

उसाँस में झुलसीं
रोष की आँच में तली हुई

बातें—

चुहल में हुलसीं
नेह— साँचे में ढली हुई

बातें—

विष की फुहार— सी

बातें—

अमृत की धार— सी

बातें—

मौत की काली डोर— सी

बातें—

जीवन की दूधिया हिलोर— सी

बातें—

अचूक वरदान— सी

बातें—

घृणित नाबदान— सी

बातें—

फलप्रसू, सुशोभन, फल— सी

बातें—

अमंगल विष— गर्भ शूल— सी

बातें—

क्य करूँ मैं इनका?
मान लूँ कैसे इन्हें तिनका?

बातें—

यही अपनी पूंजी, यही अपने औज़ार
यही अपने साधन, यही अपने हथियार

बातें—

साथ नहीं छोड़ेंगी मेरा
बना लूँ वाहन इन्हें घुटन का, घिन का?
क्या करूँ मैं इनका?

बातें—

साथ नहीं छोड़ेंगी मेरा
स्तुति करूँ रात की, जिक्र न करूँ दिन का?
क्या करूँ मैं इनका?

— वैद्यनाथ मिश्र “नागार्जुन”

30 जून 1911 — 05 नवम्बर 1998

जन्म— ग्राम तरौनी, दरभंगा, बिहार